मां शारदे का वरदान है साहित्य

रामअवतार बैरवा

साहित्य समाज का दर्पण है, इसे हम सब अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं । साहित्य हर किसी के हृदय में बसा रहता है, इस पर शायद सब एकमत होंगे पर हर व्यक्ति साहित्यकार हो सकता है इस पर सब असहमत अवश्य होंगे । साहित्य बिल्कुल अलग एक जादुई किस्म की कला है, जो बिना आध्यात्मिक शक्ति के सम्भव नहीं । अगर साहित्य की शक्ति सबके पास होती तो हर कोई साहित्यकार होता ।

एक अपढ़ व्यक्ति, यहां तक कि एक पशु में भी ज्ञान होता है। एक कुत्ता, बिल्ली, चूहा, चिड़िया या कोई भी जानवर जब अपने बच्चे एक जगह से दूसरी जगह स्थानांतरित करता हैं तो जब तक पूरे बच्चे स्थांतरित नहीं हो जाते, तब तक मां पुरानी जगह पर आती-जाती रहती है । अगर एक भी बच्चा इधर, उधर हो जाता है तो वह विचलित हो जाती है । मतलब कि वो गिनती जानती है । चिड़िया चाहे कितने दूर गगन में उड़ जाए पर जगह ढूंढ़कर अपने घौसले में आ ही जाती है, मतलब कि उसमें समझ है । हां, इंसानों की जितनी नहीं पर सांसारिक जीवन को चला सकने की हर समझ और क्षमता वो रखती है । साहित्यिक ज्ञान इंसान के अलावा किसी जीव में नहीं होता । यह एक अलग तरह का ज्ञान है , जो एक व्यक्ति को शेष व्यक्तियों से अलग करता है, उसे विशेष बनाता है । कवि की दृष्टि, उसके हृदय की उजास एक अलग दुनिया तक की यात्रा कर लेती है। हर विचार, हर चिंतन संवेदना से गुजरते हुए लौकिक प्रयोजन का आधार बनकर उभरता है । उसमें भविष्य की सच्ची शक्तियां समा जाती हैं । डॉ. बशीर बद्र के शेर -'कोई हाथ भी ना मिलाएगा जो गले मिलोगे तपाक से/ये नये मिजाज का शहर है ज़रा फासले से मिला करो" ने कोरोना काल में खूब सुर्खियां बटोरी । ऐसी कई घटनाएं हुई हैं, जिसे रचनाकार ने पहले लिख दिया है और वे हुई बाद में । ये बिना दैवीय कृपा के संभव नहीं । अनेक धर्म ग्रंथों, आध्यात्मिक विचारकों और विशेषज्ञों ने इसे स्वीकारा भी है। ''हिन्दू धर्म शास्त्रों में मां शारदे को ज्ञान की देवी माना गया है। साहित्य से जुड़ा कोई भी कार्यक्रम बिना मां शारदे की वंदना के आरंभ नहीं होता । अक्सर देखा भी गया है, जो कार्यक्रम मां की अराधना से शुरू होता है, उसमें कोई अड़चन नहीं आती। यहां तक कि जो रचनाकार मंच पर कविता सुना रहा होता है , वह कभी अटकता नहीं है''। वरिष्ठ कवि श्री मंगलेश डबराल सामान्य बातचीत करते समय अक्सर अटकते थे पर जब वो कविता पढ़ते थे तो मां शारदे की कृपा से बिल्कुल स्पष्ट पढ़ जाया करते थे। विष्णु

ISSN:2583-8849

नागर जी , बाल स्वरूप राही जी की आवाज उतनी स्पष्ट नहीं है पर रचना पढ़ते समय मां सदा उनके साथ रहती है । वरिष्ठ कवि श्री लीलाधर मंडलोई अक्सर कहते हैं कि लेखक को कलम-कागज हमेशा साथ रखने चाहिए और जब भी कोई विचार मन में आए, उसे उसी समय तुरंत लिख लेना चाहिए, विचार बाद में आए, न आए । कई बार हम पाते भी हैं कोई विचार हमारे मन में आता है, हम उसे यह सोचकर छोड़ देते हैं कि यह तो सामान्य सी बात है, कभी भी लिख लेंगे परन्तु लाख कोशिश के बाद भी वह बात मन में दोबारा नहीं आती । कवि कई बार पाता है कि कोई कविता वो बहुत जल्द लिख जाता है और कई बार घंटों प्रयास के बाद भी एक पंक्ति तक नहीं बन पाती। कई बार तो महीनों भी बीत जाते हैं। कुछ रचनाएं इसीलिए अधूरी भी छूट जाती हैं।

यह बात भी पूरी तरह सत्य प्रतीत होती है कि सरस्वती और लक्ष्मी में बैर है। जब मां काली, लक्ष्मी और सरस्वती एक ही है तो बैर कैसे ? असल में बैर देवियों में नहीं, व्यक्ति की मनोवृत्ति में होता है। मां शारदे को मानने वाला कभी लक्ष्मी की परवाह नहीं करता। ग़ालिब और निराला को अनेक जगहों से भरपूर पैसा मिला करता था पर वो पैसे अपने पास रख नहीं पाते थे । बेसहारा लोगों की किसी भी तरह मदद कर दिया करते थे। जो सच्चा साहित्यकार होता है, वो पहले बहुत अच्छा इंसान होता है और अच्छा इंसान कभी किसी को दुखी या द्रवित नहीं देख सकता। पैसे नहीं भी हो तो वह किसी से उधार लेकर भी मदद करता है। एक तथाकथित साहित्यकार वह होता है, जो साहित्यकार होना तो दूर बहुत घटिया इंसान भी नहीं होता। वह रचना के बदले पैसे मांगता है। यानी उसके लिखे हुए की कीमत कुछ पैसे होते हैं , ज्ञान या जादू नहीं। क्या किसी भी रचना का मूल्य कुछ पैसे हो सकते हैं ? अगर आज कबीर के एक दोहे की कीमत निकाली जाए तो उसका अंदाजा भी बेमानी होगा ।... कोई भी रचना या कविता मां शारदे का बहुत बड़ा वरदान होता है, वह अनमोल होती है, उसके लिए अरबों-खरबों भी कम है । अगर किसी मां से कहा जाए कि तुम अपने बच्चे को हमें बेच दो तो क्या वो बेच देगी ? इसका उत्तर हां भी हो सकता है, पर वो मां ऐसी होगी, जो या तो उसकी मां नहीं होगी या उसके कई बाप होंगे। तथाकथित साहित्यकार भी ऐसे ही होते हैं, जो रचना वो लिखते हैं या सुनाते हैं, वो उनकी अपनी होती ही नहीं । या तो वो चुटकुले होते हैं या वह किसी और की चोरी की हुई रचना होती है । अपनी रचना के बदले वो पैसे मांग ही नहीं सकता और देने वाले को भी ये सोचना चाहिए कि किसी रचना के बदले, मैं पैसे कैसे दे सकता हूं। स्वेच्छा से एक रूपया भी बहुत ज्यादा है और देने, लेने के लिए एक अरब भी बहुत कम । कविता या कोई भी रचना देह, मन, प्राण और आत्मा के मंथन से निकला एक आध्यात्मिक तथ्य है, जो सत्य के पथ पर चलता हुआ संभावनाओं के द्वार खोलता है, जीवन को शास्त्रीय बनाता है , प्रवृतियों को केन्द्र में लाकर चेतना के स्तर पर उनका मूल्यांकन करता है और पूरी तार्किकता के साथ मनुष्यता के सामने हर समस्या का समाधान बनकर खड़ा होता है। ऐसा समाधान दैवीय शक्ति ही हो सकती है।

रोहिणी, दिल्ली

ISSN:2583-8849